रात्रि सभा 1-8-68 ओमशान्ति शिव बाबा याद है?

ऐसी अवस्था बच्चों की हो जो कुछ भी तकलीफ होती है तो उस समय भी ड्रामा समझ बाप की याद में हर्षित रहे तो यह अवस्था अच्छी है। कैसी भी तकलीफ आये परन्तु ड्रामा की ढाल पर बाप की याद में रहे खुश मिजाज हो रहे। यह भी ड्रामा की भावी। फिर कल्प बाद भी ऐसे होगा। ऐसे समझे तो स्थियरस हो सकते हैं। अगर याद रहे तो। हर्षित रह सकते हैं। सिर्फ तब जब ड्रामा की ढाल पर और बाप की याद में हैं। और भविष्य उंच पद की खुशी हो तो सदैव प्रफुल्लित रहे। वह अवस्था आने की है। अभी नहीं हो सकती। टाईम पड़ा है। ऐसी अवस्था को फिर कर्मातीत अवस्था कहा जाये। माया उस अवस्था में रहने नहीं देती है। ड्रामा का ढाल पर हर्षित रहे और ड्रामा की भावी समझे। वह अवस्था आनी है। टाईम लगेगा। दैवीगुणों में पवित्रता आ जाता है। क्रोध लोभ मोह आदि यह सभी नहीं आते। दैवी अवस्था हो जाये इसमें ही टाईम चाहिए। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट। और नमस्ते।

रात्रि सभा 3-8-68: रक्षा बन्धन परसमझा सकते हो। भगवान बाप कहते हैं पवित्र बनो। राखी बांधो बात एक ही है। एक तो इस जन्म के लिए। पवित्र बनो और जन्म जन्मान्तर का बोझा जो सिर पर है सो मामेकं याद करने से भस्म होगा। बाबा ने कहा है बान्धेली गोपिकाएं हैं याद की यात्रा से जन्म-जन्मांतर के पाप कट जावेंगे। बड़ा बोझा है ना। वह तो शुरू कर देना चाहिए। सेन्टर में नहीं जाने देते-पवित्र रहने देते हैं ऐसे भी होते हैं। घर में रह याद की यात्रा में रह विकर्म विनाश करने का पुरुषार्थ करते रहो। बड़ा फिक्र तो यह है। टापिक तो बच्चों को बहुत ही समझाई जाती है। ढेर टापिक्स हैं। बाप आते हैं नई दुनिया स्थापन करने। नई दुनिया में हैं ही यह देवी देवतायें। बाबा ने समझाया है आज हरामज़ादे, कल साहब साहबज़ादे परसों शाहज़ादे। 100% हरामज़ादे, फिर 100% साहबजादे, फिर 100% शाहज़ादे। है बिल्कुल राईट। परन्तु सभा में नहीं कह सकते हैं। समझा सकते हो। कलियुग में है पतित। फिर पावन बनने लिए संगम युग। नई दुनिया है पावन। पुरानी दुनिया में है पतित। बातें तो सहज है। 84 जन्मों का राज बैज में भी है। ब्रह्मा से विष्णु। विष्णु से ब्रह्मा विष्णु 84 जन्म लेते पिछाड़ी में है ब्रह्मा। यह भी बिल्कुल क्लीयर है। 100% पतित से फिर 100% पावन बनते हैं। हरेक अपनी अवस्था को जानता है। वास्तव में बाप अविनाशी ज्ञान रत्नों का दान देते हैं। बाप आते हैं तो विनाश भी होता ही है। नई दुनिया बाप ही स्थापन करते हैं तो फिर पुरानी दुनिया का विनाश भी बातें बहुत ही सहज हैं। बच्चों को कोई बन्धन नहीं है। तुमको कितनी फ्रिडम मिलती है। रावण के कलियुगी बन्धन से फ्रिडम मिलती है। हर बात की फ्रिडम। रावण के जेल से गुलामों से फ्रीडम। लिबरेट अर्थात फ्री करते हैं। कोई बन्धन नहीं है। बाप ही दिलवाला दिल लेने वाला है। सभी दुःखों से अभी फ्रीडम मिलती है तुम बच्चों को। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट और नमस्ते।

रही हुई पायन्ट्स:- अमरनाथ पर कितने मनुष्य जाते हैं, अभी वहां अमरनाथ कहां से आवेगा। कुछ भी समझते नहीं। जैसे महानमूर्ख हैं। हम तो सूक्ष्म वतन को ही उड़ा रहे हैं। यह तो सिर्फ साक्षात्कार है। जो तुमको होता है। तुम देखते हो सूक्ष्म वतनमें बाबा ममा है। मुवी चलती है। जो तुम ईशारों से समझ जाते हो। बाकी है कुछ भी नहीं। सूक्ष्म वतन में गये फिर क्या हुआ। क्या ज्ञान वा योग सीखते हैं? कुछ भी नहीं। यह रसम रिवाज ड्रामा है। ड्रामा को बदल नहीं सकते हैं। बाकी सूक्ष्मवतन में ऐसी बातें कहां से आवेंगे। बच्चों का लुन पानी से खीर खण्ड बनाना है। यह भी सर्विस करनी है। तुम विश्व में सुख और शान्ति स्थापन कर रहे हो। तो शान्ति सुख में रहना भी चाहिए ना। भविष्य में विश्व का मालिक बनते हो। इतनी खुशी भी रहनी चाहिए बच्चों को। खुशी जैसी खुराक नहीं। स्टुडन्ट लाईफ इज दी बेस्ट लाईफ। साहबज़ादे बनने बिगर शाहज़ादे बन न सके। बाप के पास आते है साहबज़ादे। तो चलन भी ऐसी होनी चाहिए ना। अच्छा।

-:* शिव बाबा याद है? *:-